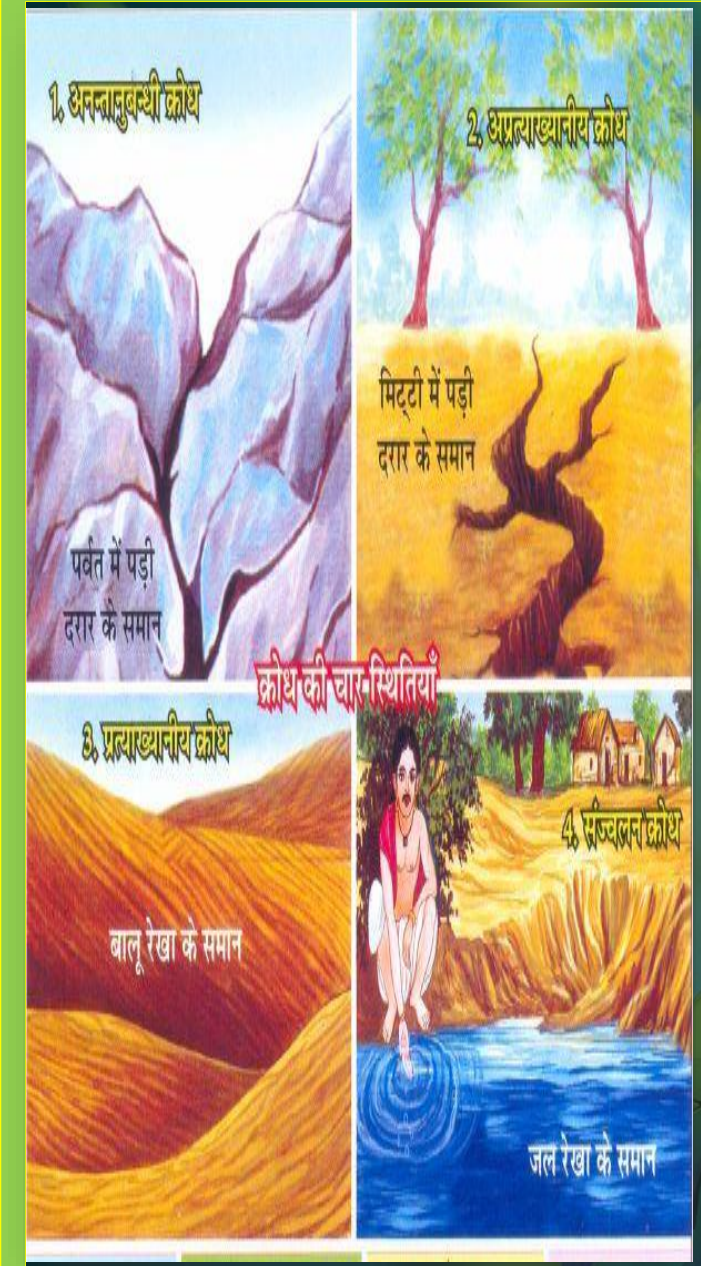

तत्त्वार्थ सूत्र

अध्याय – 8

Presentation
Developed by:
Smt. Sarika Vikas Chabra

गति-जाति-शरीराङ्गोपाङ्ग-निर्माण-बंधन-संघात-संस्थान-संहनन-स्पर्श-रस-गंध-वर्णानुपूर्व्यागुरुलघूपघात-परघातातपोद्योतोच्छ्वास-विहायोगतयः प्रत्येक-शरीर-त्रस-सुभग-सुस्वर-शुभ-सूक्ष्म-पर्याप्ति-स्थिरादेय-यशःकीर्ति सेतराणि तीर्थकरत्वं च ॥११॥

❀गति, जाति, शरीर, अंगोपांग, निर्माण, बन्धन, संघात, संस्थान, संहनन, स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण, आनुपूर्व्य, अगुरूलघु, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छवास, और विहायोगति तथा प्रतिपक्षभूत प्रकृतियों के साथ अर्थात् साधारण शरीर और प्रत्येक शरीर, स्थावर और त्रस, दुर्भग और सुभग, दुःस्वर और सुस्वर, अशुभ और शुभ, बादर और सूक्ष्म, अपर्याप्त और पर्याप्त, अस्थिर और स्थिर, अनादेय और आदेय, अयशःकीर्ति और यशःकीर्ति एवं तीर्थंकरत्व ये ब्यालीस नामकर्म के भेद हैं ॥११॥

नाम कर्म

	14 पिण्ड प्रकृति	8 प्रत्येक प्रकृति	10 जोड़े	कुल
अभेद विवक्षा	14	8	20	42
	65	8	20	93

गति

जीव भवांतर में जाता है

नरक

मनुष्य

तिर्यंच

देव

जाति

समानता से इकट्ठे किए जाते हैं

- एकेन्द्रिय
- द्वीन्द्रिय
- त्रीन्द्रिय
- चौन्द्रिय
- पंचेन्द्रिय

शरीर नामकर्म

जिसके कारण शरीर की रचना हो

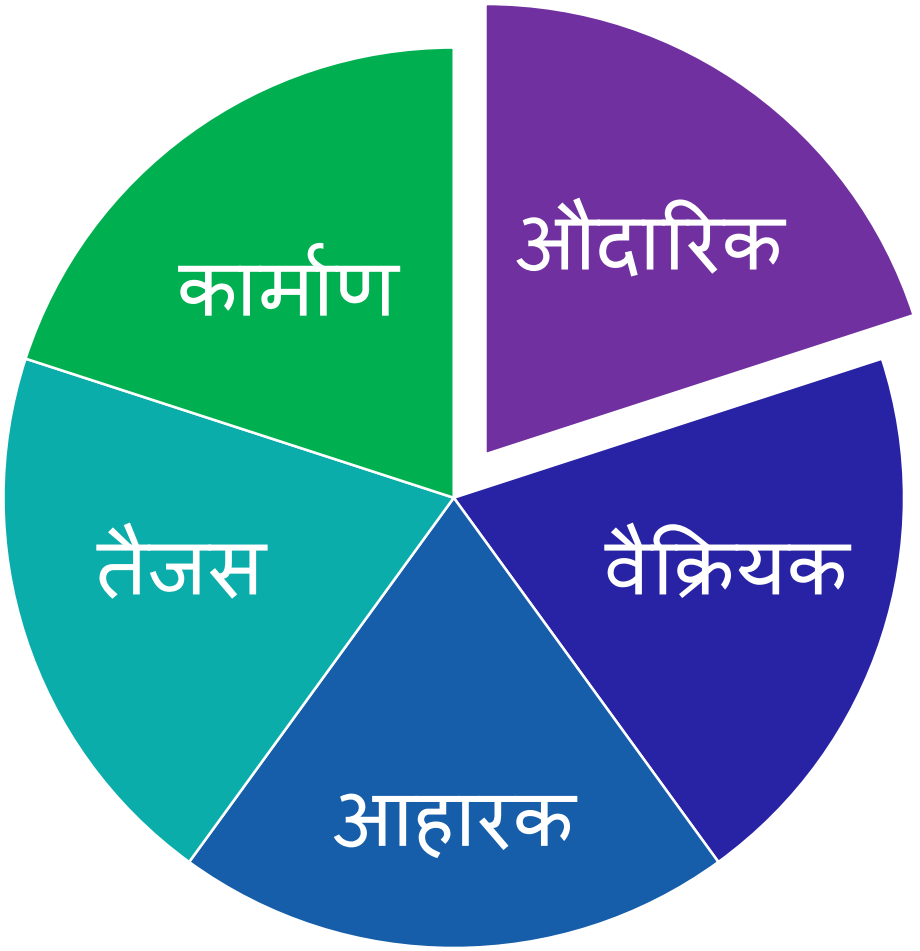

अंगोपांग नामकर्म

जिसके उदय से हाथ पैर आदि अंग व नाकादि आदि उपांग की रचना हो

औदारिक

वैक्रियक

आहारक

यह एकेन्द्रिय के नहीं होते

बंधन नामकर्म

शरीर के परमाणु छिद्र सहित इकट्ठे बंधे

संघात नामकर्म

शरीर के परमाणु छिद्र रहित एकता को प्राप्त हो

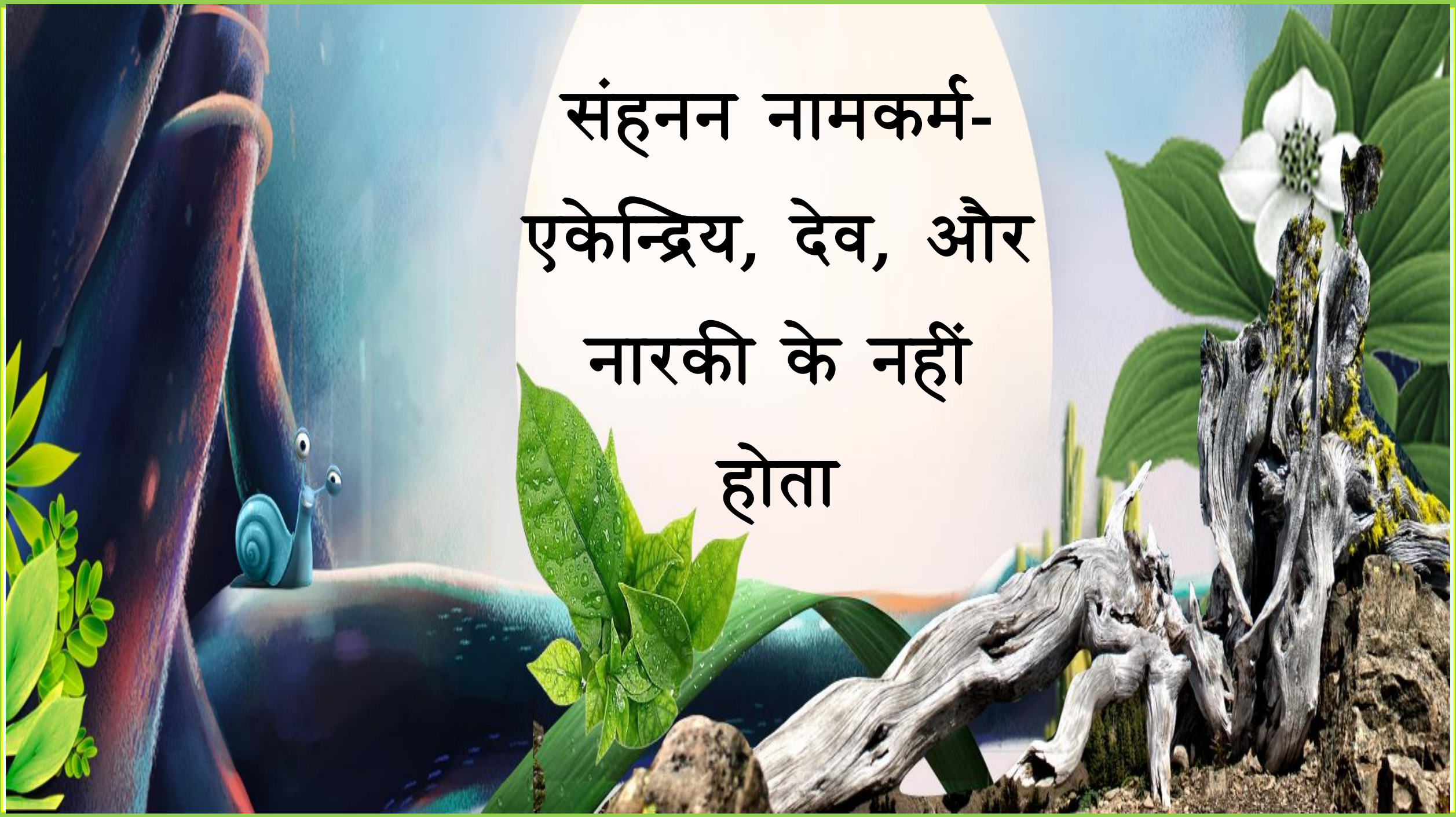
संहनन नामकर्म-
एकेन्द्रिय, देव, और
नारकी के नहीं
होता

शरीर, बंधन, संघात में अन्तर

दृष्टांत- जैसे दीवार बनाने के लिए

शरीर	ईंट जमाना
बंधन	ईंट को गारे से जोड़ना
संघात	सीमेन्ट से मजबूत करना

संस्थान नामकर्म

शरीर की आकृति बने

समचतुस्त्र	न्यग्रोध परिमण्डल	स्वाति	कुब्जक	वामन	हुण्डक
शरीर ऊपर नीचे व मध्य में सम भाग हो	वट वृक्ष वत् नाभि के नीचे के अंग छोटे एवं ऊपर के बड़े हो	सर्प की बाबी वत् ऊपर के अंग छोटे एवं नीचे के बड़े हो	कुबड़ा शरीर हो	बौना शरीर हो	अनेक विरुप अवक्तव्य आकार हो

संहनन नामकर्म

हड्डियों के बंधन में विशेषता हो

वज्रवृषभ नाराच	व्रजनाराच	नाराच	अर्द्धनाराच	कीलक	अस्रप्राप्ता सुपाटिका
वज्र के हाड़ बेठन व कीलिया हो	वज्र की हाड़ व कीली हो	वज्र रहित कीलित हड्डियों की सन्धि हो	हड्डियां परस्पर कीलित हो	हड्डियों की सन्धि अर्द्धकीलित हो	जुदे-जुदे हाड़ नसों से बंध हो

किस संहनन सहित मरा जीव कहा जन्म ले सकता है ?

संहनन	स्वर्ग में	नरक में	श्रेणी बढ़े तो
6 संहनन	आठवें (8) स्वर्ग तक	पहले तीन (3)	
प्रथम 5	बारहवें (12) स्वर्ग तक	पांचवें (5) तक	
प्रथम 4	सोलहवें (16) स्वर्ग तक	छठे (6) तक	
प्रथम 3	नवमें ग्रैवेयक तक	छठे (6) तक	उपशम श्रेणी
प्रथम 2	नवमें अनुदिश तक	छठे (6) तक	
केवल प्रथम	पांचवें अनुत्तर तक	सातवें (7) तक	क्षपक श्रेणी

किस जीव के कौनसा संहनन होता है

जीव	संहनन
* दो से चार इन्द्रिय	अंतिम संहनन
* भोग भूमि मनुष्य - तिर्यंच	प्रथम संहनन
* कर्म भूमि द्रव्य स्त्रिया	अंतिम दिन
* कर्म भूमि मनुष्य व तिर्यंच	6 संहनन

8 प्रत्येक प्रकृति

	निर्माण	अगुरुलघु	उपघात	परघात	आतप	उद्योत	उच्छवास	तीर्थंकर
स्वरूप	अंगोपांग की यथास्थान यथाप्रमाण रचना हो	शरीर भारी व हल्का न लगे	अपना ही घात करने वाले अंग हो	दूसरे का घात करने वाले अंगोपांग हो	शरीर की आभा उष्ण हो	शरीर की आभा शीत हो	स्वासोच्छवास हो	अर्हन्त पद के साथ धर्मतीर्थ प्रवर्तन हो
उदय किन्हें होता है	सभी को	सभी को	सभी को विग्रहगति के बाद	सभी त्रस को शरीर पर्याप्ति के बाद	पर्याप्त बादर पृथ्वी को (किन्हीं-	पर्याप्त तिर्यंचों को 2 को	स्वासोच्छवास पर्याप्ति पूरी होने पर	केवली को

आतप, उद्योत, उष्ण नामकर्म

	आतप	उद्योत	उष्ण
आभा	गर्म	ठंडा	गर्म
मूल (शरीर)	ठंडा	ठंडा	गर्म

10 जोड़े

प्रशस्त		अप्रशस्त	
प्रत्येक शरीर	एक शरीर, एक स्वामी	साधारण शरीर	एक शरीर, अनेक स्वामी (इनका उदय निगोदिया जीव को ही होता है)
त्रस	द्वीन्द्रियादि में जन्म हो	स्थावर	एकेन्द्रियों में उत्पत्ति हो
सुभग	दूसरे जीव अपने से प्रीति करें	दुर्भग	अप्रीति करें
सुस्वर	अच्छा स्वर हो	दुस्वर	न हो
शुभ	शरीर के अवयव सुंदर हों	अशुभ	सुन्दर न हों

10 जोड़े

प्रशस्त		अप्रशस्त	
बादर	दूसरों को रोके व दूसरों के द्वारा रूके, ऐसा शरीर हो	सूक्ष्म	न किसी को रोके, न रूके
पर्याप्त	अपने-अपने योग्य पर्याप्तिया पूर्ण हो	अपर्याप्त	एक भी पर्याप्ति पूर्ण न हों
स्थिर	शरीर के धातु-उपधातु अपने ठिकाने रहे	अस्थिर	न रहे
आदेय	प्रभा सहित शरीर उपजे	अनादेय	प्रभा रहित उपजे
यश:-कीर्ति	संसार में यश हो रहा है ऐसा जीव के द्वारा माना जाना	अयश:-कीर्ति	अपयश हो रहा है ऐसा माना जाना

पर्याप्ति किसे कहते हैं ?

गृहीत आहार आदि वर्गणाओं को

खल-रस आदि रूप परिणमाने की

जीव की शक्ति की पूर्णता को पर्याप्ति कहते हैं ।

पर्याप्ति के भेद

आहार

शरीर

इन्द्रिय

श्वासोच्छ्वास

भाषा

मन

क्रं.	पर्याप्ति	किसको	किस रूप परिणमाने की जीव की शक्ति की पूर्णता
1	आहार	आहार वर्गणा	खल (कठोर रूप) रस (पतले रूप)
2	शरीर	,, (खल-रस को)	खल– हड्डी आदि रूप रस– रूधिरादि रूप
3	इन्द्रिय	आहार वर्गणा	द्रव्येन्द्रिय आकार रूप
4	श्वासोच्छ्वास	आहार वर्गणा	श्वासोच्छ्वास रूप
5	भाषा	भाषा वर्गणा	शब्द रूप
6	मनः	मनो वर्गणा	द्रव्यमन रूप

किसकी कितनी पर्याप्ति

एकेन्द्रिय की	• आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास
विकलेन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों की	• उपर्युक्त 4 एवं भाषा पर्याप्ति
संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों की	• छहों पर्याप्ति

पर्याप्ति पूर्ण होने का काल

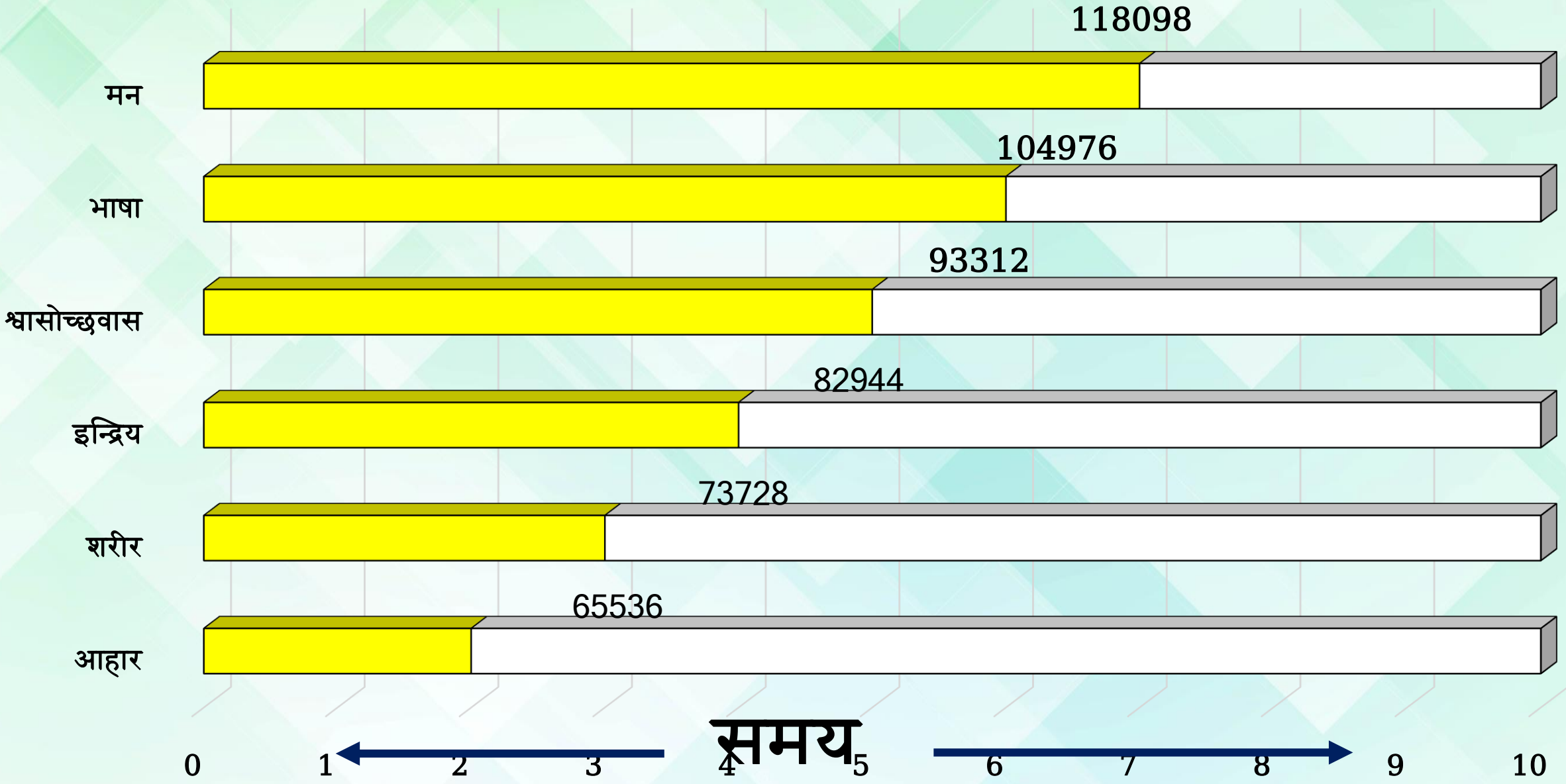

अपर्याप्त नामकर्म

निवृत्ति

पर्याप्त नामकर्म का उदय

शरीर पर्याप्ति जब तक पूर्ण न हो, पर नियम से पूर्ण होगी

लब्धि

अपर्याप्त नाम कर्म का उदय

एक भी पर्याप्ति पूर्ण न हो और न होने वाली हो

उच्चैर्नीचैश्च ॥१२॥

- उच्चगोत्र और नीचगोत्र ये दो गोत्रकर्म हैं ॥१२॥

गौत्र कर्म

उच्च- लोक पूजित कुल में जन्म हो

नीच- निन्दित कुल में जन्म हो

दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणाम् ॥१३॥

- दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य इनके पाँच अन्तराय हैं ॥१३॥

अंतराय कर्म

Designed by Pngtree

दानान्तराय	• देने की इच्छा करता हुआ भी नहीं देता
लाभान्तराय	• प्राप्ति की इच्छा रखता हुआ भी नहीं प्राप्त करता
भोगान्तराय	• भोगने की इच्छा करता हुआ भी नहीं भोग सकता
उपभोगान्तराय	• शक्ति प्रकट करने की इच्छा हो, पर शक्ति प्रकट न हो
वीर्यान्तराय	• उपभोगने की इच्छा करता हुआ भी नहीं उपभोग सकता

आदितस्तिसृणामंतरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्य: परा स्थिति: ॥१४॥

- आदि की तीन प्रकृतियाँ अर्थात् ज्ञानावरण, दर्शनावरण और वेदनीय तथा अन्तराय इन चार की उत्कृष्ट स्थिति तीस कोटाकोटि सागरोपम है ॥१४॥

मूल कर्म जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति बंध व अबाधा

कर्म	स्थिति बंध		अबाधा	
	उत्कृष्ट (सागर में)	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य (उदीरणा अपेक्षा)
ज्ञानावरण	30 कोड़ा कोड़ी	अंतर्मुहूर्त	3000 वर्ष	
दर्शनावरण				
अंतराय				
मोहनीय	70 कोड़ा कोड़ी		7000 वर्ष	1 आवली
वेदनीय	30 कोड़ा कोड़ी	12 मुहूर्त	3000 वर्ष	
नाम	20 कोड़ा कोड़ी	8 मुहूर्त	2000 वर्ष	
गौत्र				
आयु	33 मात्र	अंतर्मुहूर्त	1 कोड़ी पूर्व/3	आवली/असंख्यात
स्वामी	* संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्ति मिथ्यादृष्टि * उत्कृष्ट आयु को सकल संयमी भी बाँध सकता है ।	* आयु बिना शेष 7 क्षपक श्रेणी में * आयु मिथ्यादृष्टि मनुष्य व तिर्यंच		

विशेष

1. अबाधा - जितने काल तक कर्म फल नहीं देता ।

2. आवली = असंख्यात समय

3. एक श्वास में संख्यात हजार कोड़ा कोड़ी आवलिया होती हैं ।

शेष जीवों का उत्कृष्ट कर्म स्थिति बंध

	मोहनीय	ज्ञानावरणादि 5	नाम गोत्र	आयु
एकेन्द्रिय	1 सागर	3/7 सागर	2/7 सागर	1 कोटी पूर्व
द्वीन्द्रिय	25 सागर	25×3/7 सागर	25×2/7 सागर	
त्रीन्द्रिय	50 सागर	50×3/7 सागर	50×2/7 सागर	
चौन्द्रिय	100 सागर	100×3/7 सागर	100×2/7 सागर	
असैनी	1000	1000×3/7 सागर	1000×2/7 सागर	पल्य/असंख्यात
पंचेन्द्रिय	सागर			

उत्तर प्रकृति उत्कृष्ट स्थिति बंध

उत्तर प्रकृति (सागर में)	उत्कृष्ट स्थिति (कोड़ाकोड़ी)	उत्तर प्रकृति (सागर में)	उत्कृष्टस्थिति (कोड़ाकोड़ी)
ज्ञानावरण-5	30	वेदनीय- -असाता -साता	 30 15
दर्शनावरण-9	30	आयु- $\frac{\text{देवायु,नरकायु}}{\text{मनुष्यायु,तिर्यंचायु}}$	$\frac{\text{33 सागर मात्र}}{\text{3 पल्य}}$
अंतराय-5	30		
मोहनीय-दर्शन मोहनीय (मिथ्यात्व ही बंधती)	70		
चारित्र मोहनीय 1. 16 कषाय 2. अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसक वेद 3. स्त्री वेद 4. हास्य, रति, पुरुष वेद	 40 20 15 10	गोत्र - - नीच गोत्र - उच्च गोत्र	 20 10

उत्तर प्रकृति	उत्कृष्ट स्थिति (कोड़ाकोड़ी सागर में)
नाम- -संस्थान और संहनन -हुण्डक संस्थान, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन -आगे-बागे एक-एक संस्थान व संहनन की 2 कोड़ाकोड़ी सागर कम-कम होती जाती है	20
-आहारक शरीर, आहारक अंगोपांग, तीर्थंकर	अंत
-देवगति व आनुपूर्वी, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यश: कीर्ति, प्रशस्त विहायोगति	10
-मनुष्य गति व आनुपूर्वी	15
-द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व चौन्द्रिय जाति, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण	18
-शेष 35 प्रकृतियां	20

अनुभाग बंध

अनुभाग क्या ?

- अनुभव- विविध प्रकार की फल देने की इच्छा का पड़ना

किस रूप

- अपने-अपने नाम रूप

फल (उदय) देकर क्या होता है ?

- निर्जरा (आत्मा से कर्मपने के सम्बंध का अभाव)

कैसे परिणामों से कैसा रस (अनुभाग)

शुभ परिणाम

- पुण्य में अधिक
- पाप में कम

अशुभ परिणाम

- पुण्य में कम
- पाप में अधिक

अनुभाग की प्रवृत्ति

स्वमुख

- अपने स्वभाव रूप ही उदय में आना

परमुख

- अन्य कर्म रूप हो उदय में आना
- जैसे- असाता साता रूप उदय में आए

जिनका नियम से स्वमुख से उदय आता है

मूल प्रकृतियां

4 आयु

दर्शन और चारित्र मोहनीय

फल दान शक्ति की तारतम्यता

घातिया	अघातिया	
	पाप	पुण्य
- लता (बेल)	- निम्ब	- गुड
- दारू (काष्ठ)	- काञ्जीर	- खाण्ड
- अस्थि (हड्डी)	- विष	- शर्करा (मिश्री)
- शैल (पत्थर	- हलाहल	- अमृत

निर्जरा

सविपाक	अविपाक/सकाम	अकाम
• कर्म का स्थिति पूर्ण होने पर फल देकर खिरना	• स्थिति बिना पूर्ण हुए तपादि द्वारा बीच में ही कर्मों को खिपा देना	• इच्छा बिना भूख प्यासादि को मंद कषाय से सहना • यहाँ पाप की निर्जरा व पुण्य का बंध होता है

प्रदेश बंध

*** किस रूप ?**

- **ज्ञानावरणादि रूप**

कब

- संसारी जीवों को सदा (सभी भवों में)

किस कारण से

- योग की न्यूनाधिकता से

किसमें

- सभी आत्म प्रदेशों में (दूध में पानी वत्)

कैसे स्वभाव वाला

- सूक्ष्म एक क्षेत्रावगाही (आत्मा के प्रदेशों पर ही स्थित)

कितनी स्थिति वाले

- 1 समय से असंख्यात समय की

कितना

- अनंत परमाणु (अभव्य राशि से अनंतगुणा व सिद्ध राशि का अनंतवां भाग)

पुण्य-पाप प्रकृति विभाजन

	पुण्य	पाप	कुल
अनुभाग अपेक्षा	68	100	168
स्थिति अपेक्षा	3 (3 आयु)	165	168

कुल कर्म प्रकृति 148 + 20 = 168

वर्णादि प्रशस्त व अप्रशस्त दोनों होते हैं

पुण्य प्रकृतिया (68)

आयु (3)	नाम (63)	गोत्र (1)	वेदनीय (1)
* तिर्यंचायु * मनुष्यायु * देवायु		* उच्च	* साता

नाम कर्म

शरीर सम्बंधी (20)	वर्णादि (20)	जोड़े की प्रत्येक प्रशस्त प्रकृतियां प्रकृति (7)	पिण्ड प्रकृति (6)
- शरीर (5) - बंधन (5) - संघात (5) - अंगोपांग (3) - संस्थान (1) - संहनन (1)	- स्पर्श (8) - रस (5) - गंध (2) - वर्ण (5)	उपघात के अलावा शेष	- गति (2) - जाति (1) - आनुपूर्वी (2) - विहायोगति (1)

पाप प्रकृतिया (100)

घाति (47)	
आयु (1)	• नरकायु
गोत्र (1)	• नीच
वेदनीय (1)	• असाता
नाम (50)	

नाम कर्म पाप(50)

शरीर संबंधी (10)	वर्णादि (20)	जोड़े की अप्रशस्त प्रकृतियां (10)	प्रत्येक प्रकृति (1)	पिण्ड प्रकृति (9)
- संस्थान (5) - संहनन (5)			* उपघात	- गति (2) - जाति (4) - आनुपूर्वी (2) - विहायोगति (1)

घातिया कर्म

सर्वघाति (21)

जो अनुजीवी गुणों को पूरे तौर से घाते

देशघाति (26)

जो अनुजीवी गुणों को एकदेश घाते

सर्वघाति (21)

ज्ञानावरण (1)
दर्शनावरण (6)
मोहनीय (14)
केवलज्ञानावरण
केवलदर्शनावरण
5 निद्राएं
मिथ्यात्व
मिश्र
12 कषाय

देशघाति

ज्ञानावरण (4)	दर्शनावरण (3)	मोहनीय (14)	अंतराय (5)
* केवलज्ञानावरण के अलावा शेष चार	* चक्षु दर्शनावरण * अचक्षु दर्शनावरण * अवधि दर्शनावरण	* सम्यक्त्व प्रकृति * 4 संज्वलन कषाय * 9 कषाय	पाँचों

सप्तति-र्मोहनीयस्य॥१५॥

❁मोहनीय की उत्कृष्ट स्थिति सत्तर कोटाकोटि सागरोपम है ॥१५॥

विन्शातिर्नामगोत्रयो:।।१६।।

❁नाम और गोत्र की उत्कृष्ट स्थिति बीस कोटाकोटि सागरोपम है ॥१६॥

त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः ॥१७॥

❁आयु की उत्कृष्ट स्थिति तैंतीस सागरोपम है॥१७॥

अपरा द्वादश मुहूर्ता वेदनीयस्य॥१८॥

❁वेदनीय की जघन्य स्थिति बारह मुहूर्त है ॥१८॥

नाम-गोत्रयोरष्टौ॥१९॥

❁नाम और गोत्र की जघन्य स्थिति आठ मुहूर्त है ॥१९॥

शेषाणामन्तर्मुहूर्ता॥२०॥

❁बाकी के पाँच कर्मों की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त है ॥२०॥

८ कर्मों की स्थिति

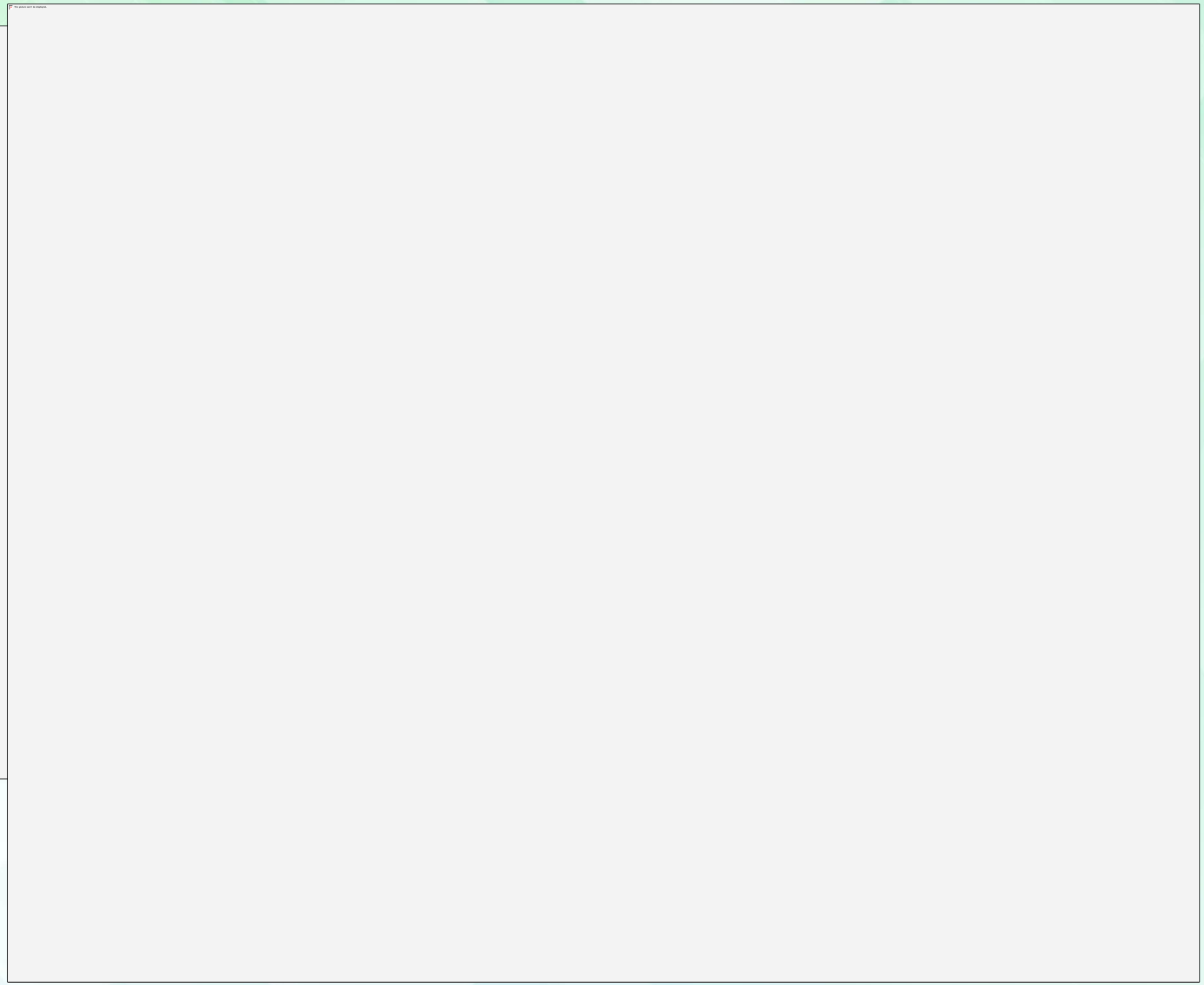

एकेंद्रिय आदि के कितना उत्कृष्ट कर्म बंध सकता है?

उत्तर प्रकृतियों की स्थिति

उत्तर प्रकृतियों की स्थिति

विपाकोऽनुभवः॥२१॥

- विपाक अर्थात् विविध प्रकार के फल देने की शक्ति का पड़ना ही अनुभव है ॥२१॥

स यथानाम्॥२२॥

- वह जिस कर्म का जैसा नाम है उसके अनुरूप होता है ॥२२॥

विपाक

वि=विशिष्ट अथवा नाना प्रकार के

पाक =उदय को विपाक कहते है

विपाक ही अनुभव/ अनुभाग कहलता है ।

कैसे परिणामों से कैसा अनुभाग बंध?

शुभ परिणाम

पुण्य में अधिक

पाप में कम

अशुभ परिणाम

पुण्य में कम

पाप में अधिक

अनुभाग की प्रवृत्ति

स्वमुख	• अपने स्वभावरूप ही उदय में आना
परमुख	• अन्य कर्म रूप हो उदय में आना

विशेष:

८ मूल प्रकृतियों, ४ आयु और दर्शन और चारित्र मोहनीय का स्वमुख से ही उदय आता है ।

उत्तर प्रकृतियों का परमुख से उदय आ सकता है, जैसे साता का असाता रूप, मतिज्ञानावरण का श्रुतज्ञानावरण रूप

फलदान

घातिया

- लता
- दारु
- अस्थि
- शैल

अघातिया(पुण्य)

- गुड़
- खांड
- शर्करा
- अमृत

अघातिया(पाप)

- निम्ब
- कांजीर
- विष
- हलाहल

कर्मों का विपाक कितने प्रकार से होता है?

पुद्गल विपाकी	• जिसका फल पुदगल में आता है जैसे शरीर नामकर्म ।
क्षेत्र विपाकी	• जिसका फल एक क्षेत्र विशेष(भव) से दुसरे क्षेत्र में जाते हुए मिलता है, जैसे नरकगत्यानुपुर्वी ।
भव विपाकी	• जो भव अर्थात् पर्याय विशेष में फल देती है जैसे ४ आयु ।
जीव विपाकी	• जो जिव में अपना फल देती है ।

ततश्च निर्जरा॥२३॥

- इसके बाद निर्जरा होती है॥२३॥

इस सूत्र में ‘च’ क्यों लगाया है?

‘च’ शब्द अन्य निमित्तों का संचय करने के लिए लगाया है,

जैसे आगे ‘तपसा निर्जरा च’ कहेंगे ।

निर्जरा

पूर्व उपार्जित कर्म का झड़ना अर्थात् आत्मा से सम्बन्ध नष्ट हो जाना निर्जरा है ।

निर्जरा

सविपाक

- कर्मों का जिस रूप में बंध हुआ है उसका उस रूप में स्वाभाविक फल देकर स्थिति समाप्त करके निवृत्त हो जाना

अविपाक

- जिनका अभी उदयकाल नहीं आया है उन्हें औपक्रमिक क्रिया विशेष के बल से उदयावली में लाकर पका देना, अनुभव करना

नाम-प्रत्यया: सर्वतो योग-विशेषात्-सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाह-स्थिता: सर्वात्म-प्रदेशेष्वनन्तानन्त-प्रदेशा:॥२४॥

❁कर्म प्रकृतियों के कारणभूत प्रतिसमय योगविशेष से सूक्ष्म, एकक्षेत्रावगाही और स्थित अनन्तानन्त पुद्गल परमाणु सब आत्मप्रदेशों में (सम्बन्ध को प्राप्त) होते हैं ॥२४॥

प्रदेश बंध

सर्व आत्म प्रदेशों से

कर्म पुदगलों का एक क्षेत्रावागाह रूप से

स्थिति को पाकर बंध हो जाना प्रदेश बंध कहलाता है

सूत्र में सर्वतः पद किसलिए दिया है?

यह प्रदेश बंध सभी कालों में होने वाला है, यह बताने के लिए सर्वतः पद दिया है ।

- प्रति समय ये अनंत रूप से बंधते हैं ।
- यदि किसी विशेष समय ८ कर्म बंधे है तो उस द्रव्य का बंटवारा ८ कर्मों के होगा, यदि आयु को छोड़कर ७ कर्म बंधे है तो उस द्रव्य का बंटवारा ७ कर्मों में होगा ।

सूत्र में 'योगविशेषात्' पद किसलिए दिया है?

परस्पर विशिष्य होता है वह है विशेष ।

योग विशेष मन, वचन, काय के निमित्त से कर्म पुद्गलों का आगमन होता है

अतः 'योगविशेषात्' पद दिया ।

सूत्र में ‘सूक्ष्म’ पद का ग्रहण क्यों किया है?

कर्म रूप से ग्रहण करने योग्य पुद्गल सूक्ष्म है स्थूल नहीं , यह बताने के लिए सूत्र में ‘सूक्ष्म’ पद का ग्रहण किया है ।

सद्वेद्यशुभायुर्नाम-गोत्राणि पुण्यम्॥२५॥

❁साता वेदनीय, शुभ आयु, शुभ नाम और शुभ गोत्र ये प्रकृतियाँ पुण्यरूप हैं ॥२५॥

अतोऽन्यत्पापम्॥२६॥

❁इनके सिवा शेष सब प्रकृतियाँ पापरूप हैं ॥२६॥

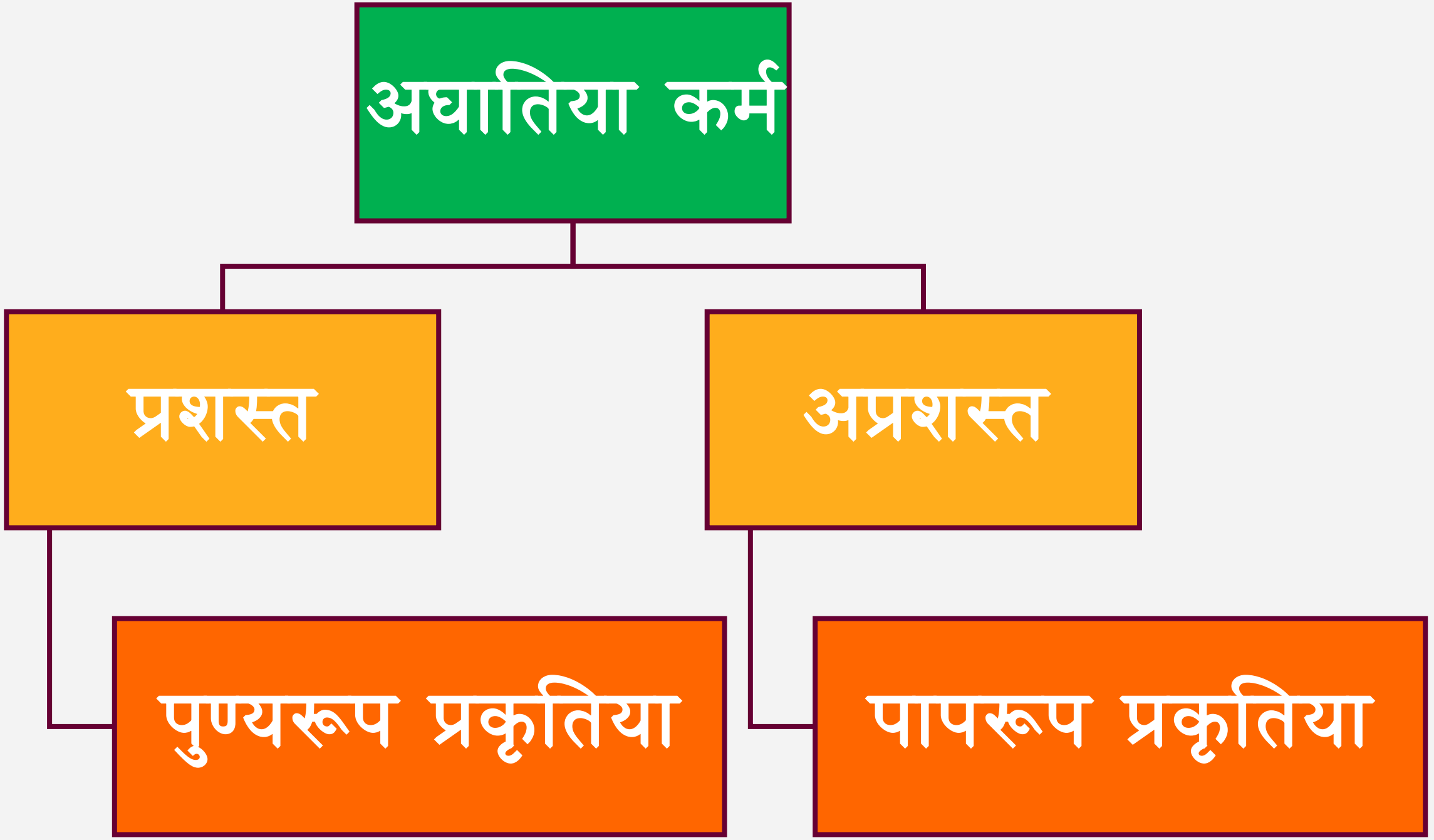
अघातिया कर्म
प्रशस्त
अप्रशस्त
पुण्यरूप प्रकृतिया
पापरूप प्रकृतिया

	भेद विवक्षा	अभेद विवक्षा
पुण्य प्रकृतिया	६८	४२
पाप प्रकृतिया	४७ + ५३ = १००	४७ + ३७ = ८४

	प्रशस्त	अप्रशस्त
वेदनीय	साता	असाता
आयु	तिर्यंच, मनुष्य, देव	नरक
नाम		
गति	मनुष्य, देव	नरक, तिर्यंच
जाति	पंचेन्द्रिय	एकेन्द्रिय — ४
शरीर, बंधन, संघात	औदारिक — ५	×
अंगोपांग	औदारिक — ३	×
संस्थान	समचतुरस्र	न्यग्रोध परिमंडल — ५
संहनन	वज्रऋषभनाराच	वज्र नाराच — ५
आनुपूर्वी	मनुष्य, देव	तिर्यंच, नरक
वर्णादि	वर्ण — ४	वर्ण — ४
विहायोगति	प्रशस्त	अप्रशस्त
गोत्र	उच्च	नीच
८ स्वतंत्र प्रकृतिया	परघात — ७	उपघात
१० जोड़े वाली प्रकृतिया	त्रस आदि १०	स्थावर आदि १०
	६८	५३

- Reference : तत्त्वार्थमञ्जूषा, गोम्मटसार कर्मकाण्ड, गोम्मटसार जीवकांड - रेखाचित्र एवं तालिकाओं में, तत्त्वार्थसूत्र - रेखाचित्र एवं तालिकाओं में
- Presentation developed by :Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889